v/;k; & v"Ve

lkjk'k ,oa fu"d"k

प्रस्तुत शोध का उद्देश्य ''विभिन्न आयु लिंग व जन्मक्रम के व्यकितयों की रंग प्राथमिकता पर उनके व्यक्तित्व के प्रभाव का अध्ययन'' करना है। अपने इस उद्देश्य की प्राप्ति हेतु शोधार्थी ने स्वः निर्मित प्रश्नावली द्वारा आयु, लिंग व जन्मक्रम तथा व्यक्तित्व मापन का उपयोग कर कुल 300 महिला व पुरुषों पर अपना शोधकार्य पूर्ण किया। आंकड़ों कें संग्रहीकरण विश्लेषण तथा सांख्यिकी विवेचना करने के पश्चात् अब शोधार्थी स्वयं को निष्कर्षों की विवेचना करने हेतु तैयार पाती है।

प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण, विवेचना तथा रेखाचित्रों के प्रस्तुतीकरण के आधार पर शोधार्थी द्वारा निम्नलिखित निष्कर्षों का प्रतिपादन किया गया है–

1. शोधार्थी द्वारा निर्धारित प्रथम परिकल्पना में सार्थक सिद्ध हुयी है कि विभिन्न व्यक्तियों की रंग प्राथमिकता में अन्तर पाया जाता है।

2. शोधार्थी की द्वितीय परिकल्पना सार्थक सिद्ध है कि विभिन्न लिंग के व्यक्तियों की रंग प्राथमिकता में सार्थक भिन्नता पायी जाती है।

   (1) विभिन्न पुरुषों की रंग प्राथमिकता में सार्थक भिन्नता पायी जाती है।

   (2) विभिन्न महिलाओं की रंग प्राथमिकता में सार्थक भिन्न पायी जाती है।

(3) शोधार्थी द्वारा निर्धारित तृतीय परिकल्पना विभिन्न आयु के व्यक्तियों की रंग प्राथमिकता में सार्थक अन्तर पाया जाता है, सत्य सिद्ध हुई है–

(1) विभिन्न व्यवस्था के बालक–बालिकाओं की रंग प्राथमिकता में अन्तर पाया जाता है।

(2) विभिन्न किशोरावस्था के व्यक्तियों की रंग प्राथमिकता में सार्थक अन्तर पाया जाता है।

(3) विभिन्न प्रौढ़ावस्था के व्यक्तियों की रंग प्राथमिकता में सार्थक अन्तर पाया जाता है।

4– शोधार्थी द्वारा निर्धारित चतुर्थ परिकल्पना विभिन्न जन्मक्रम के व्यक्तियों की रंग प्राथमिकता में सार्थक अन्तर पाया जाता है सार्थक सिद्ध हुई है।

(1) प्राथमिक जन्मे व्यक्तियों की रंग प्राथमिकता में सार्थक अन्तर पाया जाता है।

(2) द्वितीयक जन्मे व्यक्तियों की रंग प्राथमिकता में सार्थक अन्तर पाया जाता है।

(3) तृतीयक जन्मे व्यक्तियों की रंग प्राथमिकता में सार्थक अन्तर पाया जाता है।

5. विभिन्न व्यक्तियों के व्यक्तित्व में सार्थक अन्तर पाया जाता है, शोधार्थी द्वारा प्रतिपादित पांचवी परिकल्पना सार्थक सिद्ध हुयी है –

(1) विभिन्न पुरुषों के व्यक्तित्व में सार्थक अन्तर पाया जाता है।

(2) विभिन्न महिलाओं के व्यक्तियों के सार्थक अन्तर पाया जाता है।

शोधार्थी द्वारा प्रतिपादित पांचवी परिकल्पना से मिले जुले परिणाम प्राप्त हुये कि विभिन्न व्यक्तियों के व्यक्तित्व में सार्थक अन्तर पाया जाता हैं

आज के आधुनिक दौर में जहाँ व्यक्ति अपने व्यक्तित्व का आदर्श रूप प्रस्तुत करता है वहीं दिखावा प्रपंच और दोहरे पन का चलन बढ़ गया है

जिसमें कि परम्परावादी, रूढ़िवादी एवं लकीर पीटने का चलन बढ़ हो गया है जहाँ पहले कुछ रंगों पर केवल स्त्रियों का हक या पसंद (लाल, गुलाबी, नारंगी), समझा जाता था, वही अब न सिर्फ स्त्रियाँ सभी रंग को प्राथमिकता देने लगी है वरन् पुरुष भी सभी रंगों को बदल–बदल कर धारण करते हैं या जीवन शैली में परिवर्तन लाते हैं।

आज का युवक या प्रौढ़ एक ही तरह की जीवन यापन से जल्द ही उबाऊ महसूस करने लगता है। अतः यह अपने गृहसज्जा, पहनावा एवं वातावरणीय उदद्ीपकों की बदलकर नीरसता से बाहर निकलना चाहता हो तभी इसी सोच ने व्यक्तियों को समान रंग प्राथमिकता की ओर खींचा है। आज का पुरुष स्लेटी, ग्रे, क्रीम, जैसे रंगों के साथ–साथ बैंगनी नीली, पीला आदि रंगों को भी धारण करने में हिचक महसूस नहीं करता है और अपने व्यक्तित्व को निखारता है।

शोधार्थी द्वारा प्रतिपादित छटवीं परिकल्पना सार्थक सिद्ध हुयी है कि विभिन्न व्यक्तियों के व्यक्तित्व एवं उनकी रंग प्राथमिकता में भिन्नता पायी जाती है।

1– विभिन्न अन्तर्मुखी बहुमुखी एवं उभयमुखी व्यक्तित्व के व्यक्तियों की रंग प्राथमिकता में भिन्नता पायी जाती है जो कि सार्थक सिद्ध हुई है।

उपरोक्त निष्कर्ष शोधार्थी द्वारा प्रतिपादित समस्त परिकल्पनाओं में से चतुर्थ परिकल्पना पूर्णतः सार्थक सिद्ध हुई है तथा अन्य परिकल्पनाओं से मिले जुले परिणाम प्राप्त हुये हैं। परन्तु उपरोक्त सभी परिकल्पनाएँ प्रतिशतता के आधार पर अपनी भिन्नता प्रदर्शित करती हैं और यह सिद्ध करती हैं कि विभिन्न व्यक्तियो की आयु लिंग व जनमक्रम के अनुसार उनकी रंग प्राथमिकता पर उनके व्यक्तित्व का प्रभाव पड़ता है।

●●●